नौशाद साहब और ख़ैयाम से भी विविध भारती में मुलाक़ातें हुईं। हालांकि उनसे सीधे बातचीत रिकॉर्ड करने का मौक़ा नहीं मिला। संगीतकार जोड़ी कल्याणजी-आनंदजी के आनंदजी से विविध भारती के चर्चगेट स्टूडियो में मुलाक़ात हुई थी। वो इंटरव्यू कोई और ले रहा था, पर मैं उन्हें सुनने के लिए वहां मौजूद था। उन्होंने बातचीत के दौरान बताया था कि किस तरह सफर के गाने जिंदगी का सफर रिकॉर्ड करने के लिए उन्होंने किशोर कुमार को ऊंचे स्टूल पर बैठाया और माइक नीचे लगाया। उन्होंने हमें बताया था कि इस तरह माइक जब नीचे हो- तो आवाज़ का सोज़ ज्यारदा उभर कर आता है। आवाज़ में गहराई ज्यादा आती है।

एक बार किसी काम से मन्ना डे के घर जाने का मौक़ा मिला। मेरी सहयोगी और अब जीवन संगिनी ममता भी साथ थीं। परिचय करवाया गया। बताया गया कि हम किस क़दर मन्ना दा के दीवाने हैं। उन्होंने फौरन ही पूछा, ममता सिंग, डू यू सिंग। और एक ठहाका पसर गया। ममता जी एकदम निरूत्तर हो गयीं। कुछ इंटरव्यू बहुत ही मुश्किल होते हैं। इसकी वजह शायद सामने वाली शख्सियत की छवि होती है। शत्रुघ्न सिन्हा से बातचीत के लिए उनके घर जाते वक्त मैं बहुत सतर्क था। पता नहीं कब किस बात पर वो नाराज़ हो जाएं या कोई सवाल उन्हें अच्छा ना लगे। पर उन्होंने तो बचपन में कार की फ्यूल टैंक में पानी का पाइप जोड़ देने से लेकर जिंदगी के कई और किस्से बड़ी ही आत्मीयता से सुनाये। ऐसे कि ठहाके गूंज उठे। हम सबको हैरत तब हुई जब उन्होंने रामधारी सिंह दिनकर की रश्मिरथी की पंक्तियां बहुत ही प्रभावशाली तरीक़े से सुनायीं। एक फिल्मीं सितारे के मुख से दिनकर की प्रांजल भाषा वाली पंक्तियां सुनना हमारे लिए बहुत ही सुखद आश्चर्य बन गया।

जाने माने सेक्सोफोन और मेटल फ्लूट वादक मनोहारी सिंह से मुलाक़ात बड़ी ही दिलचस्प रही। एक बार हमारी सहकर्मी और राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त गायिका छाया गांगुली ने बताया कि आज मनोहारी दादा स्टूडियो में आ रहे हैं। मैंने चहकते हुए उनसे कहा कि आप मुझे ज़रूर मिलने का मौक़ा दीजिएगा। जब मनोहारी दादा को मैंने बताया कि मैं उनका कितना मुरीद हूं और किस तरह से उनके दोनों कैसेट मैंने कहीं कहीं से जुगाड़ कर जमा कर लिए हैं तो वो जज्बाती हो गये। उनकी आंखें भीग गयीं। पर्दे के पीछे काम करने वाले लोगों को शायद इतना नाम नहीं मिलता और पता नहीं क्या बात थी, क्या वजह थी कि मैंने मनोहारी दादा को इतना जज्बाती होते देखा। इसके कई बरस बाद जब मैंने फोन पर उनसे बात की और उनसे कहा कि मैं उनसे एक लंबी बातचीत करना चाहता हूं तो उन्होंने अपनी खराब सेहत का हवाला दिया। पर मैंने उनसे कहा कि अगर आप इंटरव्यू नहीं देंगे तो मैं आपके घर के आगे भूख हड़ताल पर बैठ जाऊंगा। इस बात पर वो हंस पड़े और आखिरकार मेटल फ्लूट और सेक्सोफोन लेकर स्टूडियो आए। उन्होंने जब 'जा रे उड़ जा रे पंछी' और 'हुई शाम उनका ख्याल आ गया' जैसे गानों के अपने पीस बजाकर सुनाए तो जैसे रोमांच हो गया था। इन पंक्तियों को लिखते हुए मैं बिल्कुल उसी दिन में जा पहुंचा हूं। ये सभी लम्हे इसलिए और भी मानीखेज़ बन गए हैं कि समय ने इन कलाकारों को अब हमसे छीन लिया है। पर हमारी उस बातचीत की रिकॉर्डिंग के ज़रिए उनकी आवाज़ अमर हो गयी है।

सुर साम्राज्ञी लता मंगेशकर से बात करने का सपना भला किसका ना होगा। मुझे किसी-किसी संदर्भ में उनसे टेलीफोन बात करने का मौक़ा दो तीन बार मिला। उनके घर जाने और उनके चरणों में बैठने का सौभाग्य भी मुझे प्राप्त हुआ। मुझे याद है कि जब फोन पर मैंने उनसे इंटरव्यू की बात की तो उन्होंने कहा, मेरे गाने के बारे में तो सारी बातें पहले ही हो चुकी हैं। क्या बार-बार वही बातें दोहराऊं। पर जब मैंने उनसे झोंके में कह दिया कि चलिए गाने की बात करेंगे ही नहीं। कुछ और ही बात करते हैं तो वो झट से बोल पड़ीं कि चलिए शुरू करते हैं। शुक्र है कि मेरा रिसर्च तगड़ा था और मुझे गाने से इतर उनकी रूचियां पता थीं। मैंने लता जी से क्रिकेट, फोटोग्राफी, जूलरी डिज़ाइनिंग और परफ्यूम के शौक़ के बारे में बातें कीं। जब मैंने उनसे परफ्यूम गिफ्ट करने की उनकी आदत के बारे में पूछा तो उन्होंने तपाक से कहा कि जब आप मेरे घर आयेंगे तो मैं आपको भी परफ्यूम गिफ्ट करूंगी। लता दीदी ने फोटोग्राफी और क्रिकेट के बारे में भी विस्तार से बताया। वो बातें आज हमारे संग्रहालय की अनमोल निधि हैं।

जब देव आनंद को दादा साहेब फालके पुरस्कार मिला, तो मैंने उनके दफ्तर फोन किया। पता चला कि वो तो महाबलेश्वर में हैं। किसी तरह होटल का नाम पता लगाया और वहां का नंबर खोजकर फोन किया। ऑपरेटर फोन फॉरवर्ड करने को राज़ी नहीं हो रही थी। किसी तरह दो तीन बार उसे फोन फॉरवर्ड करने को राज़ी करवाया और आखिरकार देव साहब ने फोन उठाया– है....लो। दिल की धड़कनें एकदम तेज़ तेज़ दौड़ रही थीं। देव साहब से बड़ी फलसफाई बातें हुईं। उन्होंने बताया कि वो जिंदगी में हमेशा पुरानी बातों को भूलकर आगे की सोचते हैं। उन्हें कोई गिला-शिकवा नहीं कि इतनी देर से अवॉर्ड क्यों दिया जा रहा है। बहुत-बहुत अच्छा रहा फोन पर बातें करने का वो अनुभव।

जाने माने निर्देशक ऋषिकेश मुखर्जी को जब दादा साहेब फालके पुरस्कार से सम्मा नित किया गया तो उनसे फोन पर बात करने का मौक़ा मिला। जब मैंने उनसे पूछा कि उनकी फिल्मों में रेडियो एक बैक-ग्राउंड ध्वानि की तरह हमेशा आता है। तो उनका जवाब था कि मैं ये मानता हूं कि विविध भारती मध्यवर्गीय जीवन का जीवन-संगीत है। उसका बैकग्राउंड म्यूजिक है। इसीलिए मैंने जानबूझकर ऐसा किया है। इतना अच्छा लगा ये सुनकर कि पूछिए मत।

कु छ बरस पहले जाने माने निर्माता